INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

आतंकवाद : चुनौती एवं समाधान
(Terrorism: Challenges and Solutions)

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
रक्षा अध्ययन
एम.डी.पी.जी. कालेज, प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2022-39246167/IRJHIS2210005

सारांश :
प्रस्तुत अध्ययन के चिन्तन मनन से उत्पन्न भावों को वर्तमान आतंकवाद के परिदृष्य में घटित समस्यायों जैसे–साइवर आतंकवाद मीडिया आतंकवाद, मादक द्रव्यों की तस्करी आदि तथ्यों का सामयिक रूप में विषयांकित करते हुए आतंकवाद का अर्थ, विभिन्न समयों पर आतंकवाद का स्वरूप तथा आतंकवाद के विभिन्न कारणों पर प्रकाश डाला गया है। रूस–यूक्रेन युद्ध से उत्पन्न वर्तमान वैश्विक परिदृष्य में बढ़ती हथियारों की होड़, राष्ट्रों में बढ़ती आपसी वैमनस्ता, संयुक्त राष्ट्र संघ की न्यायिक विफलता उत्प्रेरक आतंकवाद के बीज स्वरूप महाशक्तियों की स्वहित एवं सर्व शक्तिशाली सोच जैसी महत्वांकाक्षा को रेखाकिंत किया गया है, आतंकवाद के समाधान में सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक सुझावों का उल्लेख किया गया है, जो विभिन्न साहित्यों के अंशो का एक मौलिक रूप हैं।
मुख्य शब्द : आतंकवाद, उग्रवाद, मीडिया आतंकवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद, सम्प्रदायिकता, धार्मिक आतंकवाद, अलगाववाद।

प्रस्तावना :

भय, शोषण, हिंसा युद्ध एवं आतंक के वर्तमान परिदृष्य में आये दिन आतंकी घटना से विश्व चिन्तित है। आतंकी घटनायें संवैधानिक, लोकतन्त्र एवं मानवता के लिए घोर संकट है। आज सूचना प्रौद्योगिकी नें सम्पूर्ण विश्व को एक ग्राम के रूप में परिवर्तित कर दिया है वही आतंकवादी समूहों का विश्व के अन्य आतंकवादी समूहों से संलग्नता व सहयोग आज एक गम्भीर चिन्ता का विषय है।

साइवर आतंकवाद, मीडिया आतंकवाद एवं मादक द्रव्यों की तश्करी आदि जैसी आतंकवादी गतिविधियां वर्तमान की प्रमुख जटिल चुनौतियां है, जिसे सूझ–बूझ, आपसी विश्वास, एकता, दृढइच्छा शक्ति, सहयोग, सक्रियता, सजगता, कठोर निर्णय एवं सुरक्षा प्रबन्धन द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है, वर्तमान परिदृष्य में अफगानिस्तान में तालिवानी शासन स्थापित होना, पाकिस्तान एवं चीन द्वारा उसे प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करना, भारत में आतंकवादी गतिविधियों को प्रत्यायोजित होने की सम्भावना, भारत–पाक शत्रुता, भारत–चीन डोकलाम विवाद, श्री लंका के आर्थिक हालात आदि जैसी अनेकानेक विषम परीस्थितियां हैं। जिससे विश्व में

उथल–पुथल है, हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में चीन की आक्रामकता चीन द्वारा ताइवान को हड़पने की नीति, रूस द्वारा क्रीमिया पर आधिपत्य आदि घटनाक्रमों से विश्व भयभीत है। जो अराजकता भय एवं तनाव को जन्म दे रहा है। यूरोप जैसे अपेक्षाकृत स्थायित्व युक्त क्षेत्र में युद्ध की ज्वाला भभक रही हैं। यूक्रेन पर रुसी आक्रमण ने विश्व को दो भागों में विभक्त कर दिया है, बदलते घटनाक्रम में अन्तराष्ट्रीय संस्थाएं अपनी भूमिका के प्रति न्याय नहीं कर पाई है, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्थापित विधि आधारित ढाचा गत व्यवस्था कमजोर हुई है, विषाक्त युक्त इस वातावरण में विश्व राष्ट्रों की असुरक्षा ने हथियारों की खरीद तथा रक्षा बजट में वृद्धि को बढावा दिया है, उपरोक्त घटनाक्रम आतंकवादी गतिविधियों के लिए उत्प्रेरक हैं।

आतंकवाद शब्द लैटिन भाषा के Terror शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है, जिसमें आतंक का अर्थ भय या दहसत फैलाना है, बाद का अर्थ तरीका या प्रक्रिया से है, जिसमें नागरिकों के मनोबल को गिराने या मानसिक रूप से गुलाम बनाने का भाव छिपा है।[1]

आतंकवाद की उत्पत्ति मानव के अतिशय भौतिकवादी लिप्सा से जुड़ी है, भौतिक लिप्सा की पूर्ति हेतु मानव ने शस्त्र आधारित साम्राज्यवाद अर्थ आधारित पूंजीवाद तथा क्रान्ति आधारित साम्यवाद को जन्म दिया इन सभी विचारों में मानव की स्वार्थ लोलुपता स्पष्ट दिखाई देती है। स्वार्थ का यही विभत्स रूप आतंकवाद का पर्याय बन गया।[2] सामान्य अर्थ में आतंकवाद ऐसा वाद है जो लोगों में भय, आगजनी, विस्फोट, हाइजैक, अपहरण, सम्प्रदायिकता तथा क्षेत्रवाद का विष फैलाता है।

व्यापक अर्थ में यह राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित तीव्र हिंसा का प्रयोग है, जो अपने हिंसक व्यवहार द्वारा 'भय' उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। भय एवं हिंसा आतंकवाद के सिद्धान्त है।[3]

ऐतिहासिक अध्ययन आतंकवाद की पुष्टि आदिकाल से मानता है। आदिकाल में खंजर पुरुष अपने कपड़े से खंजर निकाल कर घोप देते थे, आतंकवाद का ऐतिहासिक प्रथम प्रमाण पेलोपोनेशियन युद्ध पर यूनानी इतिहासकार की पुस्तक ''थियुसीडिडीज'' मे मिलती है, जिसमें थीव्ज के सैनिकों को देखकर प्लेटुआ के नागरिकों ने अपने घरों की दीवारे तोड़ दी, सड़कों पर बैलगाड़ियों क अवरोध लगा दिया।[4]

ईशा पूर्व यहूदी रोमन सैनिकों को नष्ट करते थे।[5] इस समय शत्रु का विरोधी होना धार्मिक कृत्य माना जाता था। जिसे ईश्वर की सेवा माना जाता था। हश ए–शिन (1095–1291) समूह आतंकवाद, इसलिए फैलाता था, ताकि स्वर्ग की प्राप्ति हो सके।[6] इस प्रकार ईश्वर के नाम पर शहीद होना या शत्रु से लड़ने की धारणा थीं।[7]

आतंकवाद का आधुनिक स्वरूप फ्रांसीसी क्रान्ति में देखने को मिलता है, जब जैकोविन शासक ने विपक्ष को दवाने के लिए शासन स्थापित किया, इस समय आतंकवाद शासकीय उद्देश्य का साधन बन गया, जो सरकार द्वारा प्रायोजित भी।[7]

20 वी सदी के प्रारम्भ में आतंकवाद का व्यक्तिगत स्वरुप सामने आया, जो सिद्धान्तों को कार्य रुप में परिणति करते हुए मिखइल–वाकुनिन (1814–1976) कार्लो पिकासने (1818–1857) द्वारा इसे विस्तारित किया गया।[8] इस अवधि में अराजकतावादी समूह सक्रिय रहे, जो यूरोप के संभ्रान्त लोगों की हत्या करके सत्ता बदल देते थे। रुस में नारीदनाया बोल्या क्रान्तिकारी अराजकतावादी ने रूस के जार की हत्या, 1881 में एलिक जेन्डर द्वितीय की हत्या, फार्सीसी राष्ट्रपति फ्रेको कार्नोट की हत्या, स्पेन की प्रधानमंत्री एंटीनियों केनोवोस डी केसलियों

की हत्या, सामाझी एलिजावेथ ववेरिया की हत्या, 1914 में आस्ट्रिया के शासक आर्कडयूक की हत्या आदि आतंकवादी कृत्य था, जिसमें आतंकवाद का स्वरूप समाज को व्यवस्थित व नियन्त्रित करने हेतु किया गया। इसके बाद आतंकवाद का नया स्वरुपः स्वतन्त्रता प्राप्ति का संघर्ष बना। आयरलैण्ड का विद्रोह (1919–21) इसके उदाहरण है।

द्वितीय विश्व युद्व के बाद तृतीय विश्व के देशों नें आतंकवाद का प्रयोग आजादी की प्राप्ति तथा उपनिवेश को समाप्त करने के लिए इसे एक साधन के रूप में प्रयोग किया, जो आतंकवादी बनाम स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जानी जाती है। 1960 में दशक में आतंकवाद में ढ़ाचागत परिवर्तन आया, जिसमें राजनीति के साथ 2 सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर लिया। 1966–67 में इजराइल–फिलिस्तीन संधर्ष जिसे Zealot Struggle के नाम से जाना जाता है इसमें सक्रिय सकारी समूह ने धार्मिक आतंकवाद को जीवित कर दिया। जो आतंकवाद का एक विस्तारित स्वरूप था। अब मध्य–पूर्व इसका केन्द्र हो गया। मिस्र, सीरिया, पूर्वी यरूसलम, गाजापटटी, सेनोई, जोर्डन आदि देशों में इसका प्रभाव देखने के मिलता है। जो इजराइल पर केन्द्रित थीं। इसके बाद द्विध्रुवीय व्यवस्था में आतंकवाद का एक नया रुप राज्य प्रायोजित आतंकवाद अस्तित्व में आया, जिसे स्वार्थ एवं निहित उद्देश्य के लिए विश्व के देशों में फैलाया गया। यूरोप, एशिया, अफ्रीका मध्यपूर्व लैटिन अमेरिका आदि देशों द्वारा सामूहिक कार्य पद्धति को अपनाते हुए संगठन निर्मित किये गये। जैसे जर्मनी में रेड आर्मी, ईरान में हिजवलाह, लीविया में अबु–निदाल, अल्जीरिया में लिब्रेशन फ्रंट, अरवेनिया तूर्की में कुर्दीस्तान मजदूर पीपुल्स मुजाहिद्दीन आदि, आज का आतंकवाद व्यक्तियों, समूहों, समाजों, एवं राष्ट्रों के लिए एक विरोधाभाषी शब्द है। वाल्टर लाकर का आतंकवाद विषय पर जीवन्त पर्यन्त शोध आतंकवाद की भयावहकता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। आज अमेरिका एवं पश्चिमी राष्ट्र जिस हिंसात्मक क्रिया को आतंकवाद कहते है, कट्टरपंथी उसे जिहाद मानते है। फिलिस्तीन एवं कश्मीर के लोग स्वतन्त्रता की लड़ाई मानते है, तटस्थ सोच रखने वाले इसे क्रिया की प्रतिक्रिया मानते है, इस प्रकार आज आतंकवाद राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अनेक जटिलताओं से युक्त निरन्तर प्रक्रिया है, जो विभिन्न स्वरुपो को अपने में समाहित करके विस्तृत समूहों व प्रेरणाओं से जुड़ा है, भावनात्मक रूप से प्रसारित प्रकृति के कारण इसे समझना आसान नहीं है।

आज इसका प्रयोग कोई भी राज्य, राजनैतिक संगठन, स्वतंत्रतावादी समूह, अलगाववादी संगठन, जातीय व धार्मिक उन्मादी समूह अपने निहीत राजनीतिक उद्देश्य के लिए करते हैं, आधुनिक सन्दर्भ में यह हिंसा का ऐसा प्रयोग हैं, जो सैनिक दृष्टि से ही नहीं अपितु लक्ष्य को मनोवैज्ञानिक रुप से प्रभावित करता है, यह मानवता के प्रति एक धमकी है, जिसको निर्मित करने मे यह भावना निहीत होती है कि मानव जाति को शान्ति से वंचित कर दिया जाय, यह सुरक्षा, राष्ट्रों के मध्य आपसी समझ, सामाजिक, विकास तथा प्रजातन्त्र के प्रति सीधी प्रताड़ना है।[9]

आतंकवाद, अलगाववाद, क्षेत्रवाद, नृसंहली हिंसा सम्प्रदायवाद आदि की मूल जड़ में भौगोलिक स्थित, ऐतिहासिक कारण, आर्थिक कारण, सांस्कृतिक कारण, विकासात्मक प्रपंचना तथा सामरिक स्थितियां है, जिसका समुचित समाधान न किये जाने के कारण विभिन्न समस्याओं का जन्म होता है। सामाजिक अशान्ति आतंकवाद का एक कारण है, जो लम्बे समय तक उपेक्षित रहने के कारण विद्रोही सोच को जन्म देती है, मनोविज्ञान की

धारणा है कि मनुष्य में बदला लेने की भावना होती है। यही सोच आज विभिन्न क्षेत्रों में असन्तोष का कारण है, जो भावनात्मक होने के कारण विद्रोह एवं हिंसात्मक रुप धारण कर रही है, सरकारी तंत्र से इनका विश्वास हट जाता है और ये सरकार के समानान्तर अपना प्रशासन चलाना चाहते हैं। बेरोजगारी भी आंतकवाद का कारण है, रोजगार न पाने पर युवा वर्ग गलत रास्ते अपना लेते हैं, इन्हें गुमराह करना आसान होता है, आतंकवादी समूह इन्हें लालच देकर आसानी से गुमराह कर लेते है।विदेशी संरक्षण एवं हस्तक्षेप भी आतंकवाद को जन्म देती है जो विरोधी राष्ट्र में प्रतियोगिता की भावना पैदा करती है, वहीं बाद में ईष्या का रूप धारण कर लेती है, अपनी इच्छित ईष्या की पूर्ति हेतु वह सामाजिक एवं आर्थिक ढाचे को नष्ट करने के लिए आतंकवाद को प्रश्रय देने लगते हैं। इससे सामाजिक ताना बाना बिखर जाता है, जिसमे राजनैतिक स्वाइत्व एवं आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

महाशक्तियों की वर्चस्ववादी एवं सर्वशक्तिमान सोच ने आतंकवाद को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, अमेरिका ने अफगानिस्तान से रूसी सैनिकों को हटाने के लिए अल कायदा अध्यक्ष ओसामा विन लादेन को प्रश्रय, प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता प्रदान की। अमेरिका एवं रूस आज आतंकवाद सफाये के नाम पर अपने वर्चस्ववादी हितों को साधने में लगे है, अमेरिका विनाशकारी शस्त्रो के एकीकरण के नाम पर इराक में आतंक ही आतंक फैलाया, जब कि युद्ध के बाद इराक में कोई भी विनाशकारी हथियार नहीं मिले, रूस यूक्रेन वर्तमान युद्ध रूस एवं अमेरीकी वर्चस्व का ताजा उदाहरण है, जो विश्व में हथियारों की होड़ को बढ़ावा दे रहा है, जो द्वितीय विश्व युद्ध कालीन शान्ति व्यवस्था के लिए एक चुनौती वन रही है, अतः jay million का यह कथन कि–''आतंकवाद एक तरह का शस्त्र संघर्ष है।''[10] उपयुक्त ही है, क्योंकि राजनय के असफल होने पर सैनिक कार्यवाही, और सैनिक कार्यवाही के असफल होने पर यही आतंकवादी रूप धारण कर लेता है। वर्चस्व की इसी नीति के अन्तर्गत अमेरिका की CIA रूस की KGB चीन की PLA तथा पाकिस्तान की ISI नें आतंकवादियों को अपने निहीत उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आधुनिकतम सस्त्रात्रों तथा अनेक विस्फोटक हथियारों का प्रयोग प्रशिक्षण देते रहे हैं।[11] भय एवं हिंसा के प्रसार में साहित्य एवं फिल्मों की भूमिका भी एक कारण है, सन्त जू की 'आर्ट आफ वार' जिसमें कहा गया है 'एक को मारों हजारों को भयभीत करो', अमेरीकी पुस्तकालय में तोड–फोड एवं विस्फोटक सामग्री का ज्ञान देने वाले साहित्य उपलब्ध है, जो आतंकवादियों को उपलब्ध कराये जाते हैं, इसमे 'दि रेडिकल गाइड' आतंकवादियों की प्रिय पुस्तक है, फिल्मों में 'द वैटिल आफ अल्जीयर्स' आतंकवादियों की लोक प्रिय फिल्म है।[12] इस प्रकार सामाजिक, असमानता, शोषण, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अन्याय, राजनीतिक सत्ता की भूख क्षेत्रीय असामनता, क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा राजनैतिक इच्छा शक्ति, सामाजिक नैतिक मूल्यों का अभाव, शिक्षा का अभाव, सामन्तवादी सोच, दलित आदिवासी सोच महिलाओं का शोषण जातीय वर्चस्व की लड़ाई कुंठा, क्रोध बदले की भावना आदि नकारात्मक सोच जैसे अनेक कारण है। जिस राष्ट्र या समाज में ये भावनाए होगी. वहाँ की जनता को आसानी से गुमराह किया जा सकता है, आतंकवादी इन्हें काल्पनिक सपने दिखाकर आतंक एवं हिसा की और अग्रेसित करने में सफल हो जाते हैं।

आज सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विकास से सामाजिक, आर्थिक एवं वैश्विक परिवर्तन अवश्य आया है किन्तु वहीं विश्व में सम्प्रदायिक आतंकवाद, धार्मिक आतंकवाद, राजनैतिक आतंकवाद, जैव आतंकवाद, साइबर आतंकवाद, आणुविक आतंकवाद आदि का प्रभाव भी बढ़ने लगा है। आज के भौतिकतावादी समाज में दिन

प्रतिदिन धार्मिक कट्टरता बढ़ रही है, धर्म की आड में नौजवानों को हिंसक बनाया जा रहा है। उन्हें आतंकी प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

सुदूर अरब, अफ्रीका एवं एशिया के देश आतंकी फैक्टरी के रूप में कार्य कर रहे हैं। गरीब, अशिक्षित नवयुवको को धर्म का हवाला देकर, पैसे का लालच देकर उन्हें आत्मघाती हमले के लिए प्रेरित किया जा रहा है, गरीब देशों में भी असन्तोष की भावना विकसित देशो के विरुद्ध संगठित संघर्ष का रूप धारण करती जा रही है।

आज के आतंकवादी संगठन अपनी महत्वाकांक्षा भी पूर्ति के लिए विधि स्थापित शासन व्यवस्था को समाप्त कर अपनी व्यवस्था चलाना चाहते हैं, जिसके लिए वे अनैतिक कार्यों को 'साधन' के रूप में प्रयोग कर रहे हैं, एन्थ्रेक्स एयर क्रॉफ्ट हमला जिसमें महामारी फैलाने वाले रसायनिकों का प्रयोग किया गया। जो आतंकी क्रूरता का प्रमाण है, शांति सुरक्षा एवं मानवता के विनाश हेतु, रसायनिक, परमाणुविक, जैविक प्रतिबद्धता विश्व समुदाय के लिए घोर संकट का विषय है।

तालिबानी सरकार अफगानिस्तान में मानवीय सभ्यता एवं संस्कृत का विनाशक है, अलकायदा, जैश मोहम्मद, लश्करे तैयबा, हिजबुल मुजाहिदिन, आदि आतंकी संगठन का उद्देश्य भारत में आतंक फैलाना है। अलवुशरा संगठन सीरिया में, वोकोहरम नाइजीरिया में पश्चिमी शिक्षा एवं संस्कृत का दुश्मन है, सीरिया एवं इराक के आतंकी समूह पूरे विश्व में इस्लामीकरण एवं शरिया कानून लागू करता चाहते हैं।

आतंकवाद विकास का शत्रु है, जो मानव सभ्यता संस्कृति को नष्ट करना चाहते हैं, वे नहीं चाहते कि मानव आर्थिक विकास कर सुख शान्ति से रहे, आतंकवाद, मानवाधिकार का भी शत्रु है जहाँ आतंकवाद होगा, वहीं मानवाधिकार स्वतः नष्ट हो जाते हैं। आतंकवादी अपनी संकीर्ण मानसिकता के कारण विश्व में धार्मिक कट्टरता बनाये रखना चाहते है ताकि समाज देश व जातियाँ वर्गों एवं सम्प्रदायों में विभक्त रहें, हिंसात्मक वातावरण मे एक दूसरे से लड़ते रहे, जिससे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विकास न हो पाये।

आज के आतंकवादियों का दूसरे देश के आतंकवादियों से संलिप्तता चिन्ता का विषय है, अन्य देशों द्वारा आतंकी कार्यवाही हेतु हवाला के माध्यम से धन मुहैया कराया जाता है, इसमें सफेद पोस बडे व्यापारी संलग्न है, सीमा पार से आतंकवादियों को सहायता दी जा रही है। वर्तमान समय में सीमा पार से ड्रोन मिसाइल हमले द्वारा आतंकवादी कार्यवाही को अंजाम दिया जा रहा है, आज के आतंकवादी पद्धति में 3T फैक्टर पर कार्य हो रहा है, टैरिटरी, टाइम, टारगेट, जिसका निर्धारिण वे स्वयं अपने अनुरूप कर रहे हैं।

मादक पदार्थों की तस्करी आज आतंकवाद की एक बड़ी चुनौती है। जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख की भौगोलिक स्थित तथा सामरिक स्थित सें इरान, अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान से बना स्वर्णिम अर्ध चन्द्राकार स्वरूप जो विश्व का सबसे बड़ा अफीम एवं हथियारों का उत्पादक क्षेत्र है, यहाँ से मादक पदार्थों को भारत में पहुंचाया जा रहा है। आज यह क्षेत्र ड्रग्स का प्रमुख केन्द्र बना है, वर्ष 2019 में गुजरात के अंडानी बन्दरगाह में तथा 25 अप्रैल 2022 में कश्मीर में ड्रग्स का खेप मिलना चिन्ता का विषय है, आज नव युवकों को नसेडी बनाया जा रहा है, ड्रग्स के पैसे का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों में हो रहा है। पाकिस्तान के द्वारा प्रायोजित इस आतंकवाद को रोकने के लिए स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत भारत सरकार 4.27 करोड़ की लागत से नशा

मुक्ति केन्द्र के माध्यम से कार्य कर रही है। किन्तु यह पर्याप्त नहीं और सार्थक कदम उठाने की जरूरत है। जिससे आतंकवादियों की रीढ़ तोड़ी जा सके।

साइवर आतंकवाद आज की सबसे बड़ी चुनौती है। सूचना संचार की क्रान्ति में विश्व डिजिटल की ओर अग्रसित है, प्रत्येक राष्ट्र के सम्पूर्ण कार्य, जैसे प्रशासन, शिक्षा, स्वाथ्य सैन्य, रेलवे, एयरलाइन्स, बैक, स्टाकमार्केट तथा जन जीवन से जुड़ी अनेकानेक कार्य कम्प्यूटर एवं नेटवर्क पर आधारित है। आज आतंकवादी संगठन साइबर तकनीक का प्रयोग करके सूचनाओं को हैक कर लेते हैं। साइवर–स्पेस आज सरकार को आंतंकित करने का प्रवल माध्यम बन गया है। आज अलकायदा जैसे आतंकी संगठन इसका प्रयोग आतंक फैलाने में कर रहे हैं।

समाधान एवं सुझाव :

आतंकवाद एक संक्रामक रोग है, इसका इलाज हमें एलोपैथिक एवं होम्योपैथिक दोनों रूप से करना होगा, एलोपैथिक से हमारा तात्पर्य सैनिक कार्यवाही से है, जो आतंकवाद के ऊपरी भाग पर तुरन्त असर करेगी, जिससे आतंकवादी हतोत्सासित होगे, यह तत्कालिक समाधान है, किन्तु सम्पूर्ण नहीं, 1976 में इजराइल सम्पादित आपरेशन 'थन्डर वोल्ड'1977 में पं0 जर्मनी द्वारा सम्पादित 'मोगदिश' 1984 में पंजाब ब्लूस्टार आपरेशन आदि इसी प्रक्रिया द्वारा निमन्त्रित किया गया, पुलवामा हमले के बाद सर्जिकल स्ट्राइक, तथा कश्मीर से धारा 370 एवं 35 A के हटने बाद एलोपैथिक इलाज अपनाया गया। जिससे आतंकवादी हतोत्साहित हुए है। आतंकवाद के सम्पूर्ण एवं स्थाई समाधान हेतु होम्योपैथिक इलाज आवश्यक होगा, जिसमें दीर्घकालिन सामाजिक, आर्थिक सुधार एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को अपनाना होगा, जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ, रोजगार एवं उसके सम्मान का ध्यान रखना होगा। जिससे उनका मोह आतंकवाद से भंग होगा और वे मुख्य धारा से जुड़ जायेगें। इस प्रकार सामाजिक, आर्थिक एवं मनो वैज्ञानिक सुधार आतंकवाद की समस्या के स्थाई समाधान में सहायक सिंद्ध होगा।

आतंकवाद के उन्मूलन हेतु विश्व समुदाय को सजगता एवं ईमानदारी से कार्य करने की आवश्यकता है, जो देश आतंकवाद को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग करते है, उनके विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय मंचों द्वारा उन पर कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए, विश्व शान्ति, लोकतन्त्र एवं मानवाधिकार की रक्षा हेतु विश्व, राष्ट्रो को ईमानदारी एवं निष्पक्षता के साथ कार्य करना चाहिए, निरंकुश शासन पर कठोर कार्यवाही करनी चाहिए। खुफिया एवं जाँच ऐजेन्सियों को उच्च तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्हें पूर्ण संसाधन युक्त बनाया जाना चाहिए। राजनीतिक दखल पर नियन्त्रण होना चाहिए, उनकी गोपनीय रिपोर्ट को गम्भीरता पूर्ण निर्णय लेकर तुरन्त कार्यवाही की जानी चाहिए, सरकार एवं एजेंसियों में बेहतर तालमेल होना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय सीमायों की सुरक्षा, चौकसी नवीन तकनीकी सेंसर उपकरणों से की जानी चाहिए। सीमा पार से हथियारों एवं ड्रग्स के आवागमन पर कठोर नियन्त्रण स्थापित करना चाहिए। आंतकी साहित्य एवं पत्र–पत्रिकाओं पर अंकुश लगाना चाहिए। सुरक्षा बलों के मनोवल को बढ़ाने हेतु उन्हें आधुनिक हथियारों एवं सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाय। जिससे वे आतंकवादियों का मुकावला पूरी निष्ठा एवं पूर्ण ऊर्जा के साथ कर सके। आतंकी घटनायों की त्वरित एवं निष्पक्ष निर्णय द्वारा उन्हें दण्डित किया जाना चाहिए। जिससे उनमें भय बना रहें, इससे समाज में आत्म विश्वास व सुरक्षा की भावना पैदा होगी, आतंकवाद विरोधी कानूनों को सक्त एवं पारदर्शी होना चाहिए। जिससे निर्दोष प्रताडित न हो तथा दोषी बच न

सके। धार्मिक कट्टरता एवं उन्माद फैलाने वाले असमाजिक तत्वों के खिलाफ सरकार द्वारा कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए। विश्व समुदाय को एक मंच पर आकर आंतकवाद को रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय जनमत तैयार करना चाहिए।

इस प्रकार सरकार एवं प्रशासन को सजगता, ईमानदारी, पारदर्शिता के साथ कार्य करते हुए विकासात्मक गुणवत्ता को बनाये रखना होगा। तथा प्राकृतिक संसाधनों के अवैध दोहन को रोकना होगा, उनके हितो के अनुरूप न्यायपूर्ण एवं सम्मानपूर्ण वितरण पर कार्य करना होगा। विना भेदभाव के सबको शिक्षित करना होगा। वोट एवं तुष्टीकरण की राजनीति से ऊपर उठकर गरीब, दलित, आदिवासी, पिछडों व महिलाओं के विकास पर कार्य करना होगा।

सन्दर्भ–सूची :

1. आतंकवाद : बदलता स्वरूप एवं चुनौतियां पृष्ठ 15
2. नई सहस्त्राब्दी का आतंकवाद : डॉ वीरेन्द्र सिंह यादव सम्पादकीय पृष्ठ 07
3. नई सहस्त्राब्दी का आतंकवाद : डॉ वीरेन्द्र सिंह यादव सम्पादकीय पृष्ठ 08
4. प्रतियोगिता दपर्ण 1999/1538
5. बुस होफ्फमन इन साइट टेरेरिज्म कोलम्बिया यूनवर्सिटी प्रेस 1988
6. डेविड, रेपोपोड़ फीयर एण्ड ट्रेवलिंग टेर्ररिज्म इन प्री रिलिजीयस अमेर्रिकन पोलिटिकल साइन्स रिव्यू 1984 पृष्ठ 658
7. चालियण्ड गिराई दि हिस्ट्री आफ टेर्ररिज्म : फ्रॉम एन्टी क्विटी टू अलकायदा यूनिवसिर्टी आफ़ कोलम्बिया प्रेस 2007 पृष्ठ 68
8. वही पृष्ठ 116।
9. आर के गुप्ता, ग्लोबल टेरेरिज्म पृष्ठ1।
10. नई सहस्त्राब्दी का आतंकवाद : संघर्ष के बदलते प्रतिमान सम्पादकीय पृष्ठ 6
11. इन्टरनेशनल टेरेरिज्म : ए मिनेसिंग, मोन्स्टर मेजर आर. सी. कुलश्रेष्ठ सम्पादकीय पृष्ठ 10
12. इन्टरनेशनल टेरेरिज्म : ए मिनेसिंग, मोन्स्टर मेजर आर. सी. कुलश्रेष्ठ सम्पादकीय पृष्ठ 10

IRJHIS